

Ques: — critically examine the Behaviouristic theory of Perception?

Ans: —

Behaviouristic Psychologists ने perception की study को केवल step motherly treatment दिया है। इनके system में perception के अध्ययन नहीं मिल सगा जो psychological environment में मिलना चाहिए था। चूंकि Behaviourists का interest केवल responses की study यानी "R-psychology" तक ही limited रही। इसलिए इनकी ने सभी तरह के perception को (चाहे simple ही या complex, triangle का perception हो या colour या distance का) Learning का परिणाम माना। और साथ ही इनकी theory का अन्त यही ही जाता है। कुछ मिलाकर इनके descriptions को हम केवल descriptive कह सकते हैं, जहाँ Integration और Interpretation की ओर नहीं के बराबर effort दिखलाया गया है।

किसी भी Behaviouristic theory में generally दो बातें देखी जाती हैं:—

- ① Empiricism (Influence of Learning)
- ② Neuro physiological explanation.

Behaviourists के

अनुसार perception एक Learnt Behaviour होता है। एकाएक जब हम इसे Learnt मान लेते हैं तो इसमें कुछ दूसरे दूसरे connected phenomena भी शामिल होंगे। उदाहरण के लिए — Habit formation, generalization, inhibition इत्यादि। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह theory ब्यास तीर से Muller's theory of Learning पर dependent है। अगर बहुत कम प्रयास किया गया है कि इन principles को थोड़ा detail में perception के लिए लागू किया जाए

Behaviourists ने perception

के study के लिए दो approaches का help लिया है।

① via verbal report method.

② via discrimination learning.
(Pavlovian model)

Perception & Behaviour-

-tic theory को सर्वप्रथम CLARK और Hull ने formulate किया और इस सिद्धांत में interaction of neural impulses को अपने theory का corner stone बनाया है।

Hull ने कुछ postulates के साथ भी प्रयोग किया जो उन्हीं खुद बनाया था।

① All sensory neural impulses active in the N-system at any moment, interact and change each other into some thing partially different.

② दूसरे postulates का अभाव patterning of stimulus of compound से बताया गया है। particular pattern of stimuli may become associated with such reactions that are distinct from those produced by the component stimuli, occurring in other pattern.

Hull के उपरोक्त two postulates को देखते हुए हम कुछ दिए गए जैसे evidences को भी examine करें, जिनसे Behaviouristic theory को support मिला है। इस तीन प्रकार के ऐसे evidences हैं: →

① एक नन्हा बच्चा अपने Daddy के face को और उसके face की ओर आम तौर से positively response बना लेता है। अगर वही बच्चा तब डूबी तरह frightend हो जाता है, जब देखता है कि किसी मीठे पर Daddy के face और that कुछ unusual combination में उग्र

होते हैं।

② एक दूसरे सफल के रूप में "Mumpsphary" paradox" के आशय दिया जाता है। Subject को conditioning के द्वारा ऐसा training दिया जाए कि जब भी उन्हें ब्रॉस प्रकार का tone मिले तो वे अपना हाथ ऊपर ही और उठा लें। ऐसा करने पर फिर भी हम पाते हैं कि जब वही tone किसी सुश्रु-
-phone पर दर्जनी बार बजता रहता है, तो वही subject अपना हाथ उठा नहीं उठाते।

③ WOODBURY ने इस Patterning Phenomena को अपने experiments से demonstrate किया है। उसने एक dog को यह training दिया कि यदि उसे भोजन पला है तो छुट्टी ही नाउ से touch करे। मगर भोजन उसे तभी मिलता था जब एक high pitch और एक low pitch की भाषण को सुने ही dog में ~~संबंध~~ संबंध देवी जाए। यदि dog इस component के किसी एक part के अलग से पेश होने की ओर react करता तो उसे reinforcement नहीं दिया जाता था। Experiment के अन्तर्गत यह पता चला कि M.L की ओर response की frequency सबसे अधिक थी, मगर डेवलपमेंट 'M.L' की ओर वही बात नहीं देवी गई।

आलोचना :-

① अगर आलोचना ने यह कहा है कि इस theory के support में जितने भी evidences दिए गए हैं, उनका perception के साथ कोई भी सीधा सम्बन्ध नहीं रहा जा सकता और यह केवल discrimination learning के ही examples हैं। मगर जिनके एक बात अर्थ ही साबित होती है कि '0' अलग-अलग stimulus pattern की ओर अलग-अलग ढंग से response करना सीख सकता है और इस प्रकार का discrimination ही हमारे जीवों से अधिक perceptual habits के वर्तन में helpful होता है। खुद अवलोकित psycho-

- Logos भी अभी तक यह prove नहीं कर सके हैं कि ^{Perception} Perception 100% ambiguous होता है।

② Mull की Interactional theory ने किसी भी भी पक्षों को नहीं दिया है। जहाँ तक Behaviourist का प्रश्न है, वे भी ऐसा मानते हैं कि Stimulus patterning के postulate को बनाकर Gestaltist को एक बहुत बड़ा conce-
-sion दिया गया है। जिसके लिए Mull को भाग नहीं दिया जाना चाहिए। क्योंकि ऐसा प्रसंग उसने field forces के लिए प्रश्न का प्रश्न पूरे कुछ छोड़ दिया है। दीर्घ दूरबी और Gestaltist भी इस theory को अच्छी तरह से mechanistic मानते हैं — एक ऐसा बोध्य रूप जिसे वे ~~संभव~~ सिद्ध करने को अपना चाहिए।

③ Mull के theory की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि बहुत ही gross theory है। केवल इतना ही कहना कि Sensory impulses आपस में interact करते हैं, सैवात् नहीं बनती। ऐसे interaction की degree तथा उनके effects को govern करने वाले laws को भी नए सीरे से बनाने की जरूरत है। Mull अपने इन drawbacks की और जागरूक दिखता है और शायद इसीलिए उसने Interaction Process के quantitative study के लिए एक method भी suggest किया है।

इस प्रकार यह clear है कि अपने Behaviour-
-istic जोड़ा-शरीर में Mull ने mentalistic concept के बदले Neural concepts का use किया है। अगर ऐसा लगता है कि ऐसा करके वह अपने ही Behaviourism के boundary के भीतर नहीं रह सके हैं और Gestaltism का धार में फँसता गया है।

Dr. M. S. Ghosh

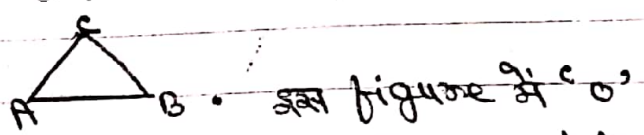
दूसरी Behaviouristic theory NEBB ने भी दिया है।

Perception की एक

जिनाका यह कहना है कि Perception बहुत कुछ learnt होता है और उसे neurological model पर ही explanation दिया जा सकता है।

HEBB ने अपने work को explain करने के लिए जिस first postulate को बनाया उसे "concept of cell assembly" कहते हैं। यह cortical neurons का एक ऐसा गुण होता है जो एक दूसरे से functionally interconnected होता है। दूसरा postulate यह है कि इन "cell assemblies" को practice के जरिया develop किया जा सकता है। फिर, यह भी कि नये neural associations कुछ synaptic knobs के द्वारा practice के सहारे मजबूत होते हैं। सबसे दोहे से दोहे "cell assembly" में भी हजारों हजार neurons शामिल हुआ करते हैं।

एक triangle का उदाहरण देते हुए - HEBB ने perception के process को कुछ इस प्रकार explain किया है -



पहले 'A' ही और दीखता है, और तुरंत cell assemblies बनकर तैयार हो जाते हैं। फिर, वह 'C' अपने function को एक-एक कर C और B पर shift करता है। कहना होगा कि इनके लिए भी भसग-भसग cell assemblies बनकर तैयार हो जाते हैं। जब यह काम पूरा हो जाता है तो practice देने पर 'A' के stimulation से मत 'C' में action होने लगता है जो फिर 'B' में activated हो जाता है और यह functionally related होता है। बाद में चलाए जब सभी triangle पैदा किया जाता है तो वे cell assemblies जो सीखे गए sequence में active हो जाते हैं। जिसके लिए triangle का हमें perception होता है इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यह सब empirical factors और neurophy-

- neural units - दोनों की perception के लिए कार्यरत होते
हुआ करते हैं।

मगर, भाषीयों ने यह दलील दिया की है कि cell
assemblies की ठागी ठीर भी काफी तीर से demonstrate
करना होगा। इस मिसालों में physiologists को lead लिए
जाने की जरूरत है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपरोक्त
गए Behaviouristic theories (HEBB + HULL) से percep-
-tion की पूरी-पूरी व्याख्या नहीं हो पाती है। हीक किसी प्रकार
जैसे Gestalt theory भी अपने सभी atomistic और
सभी empirical approach के कारण से perception की
व्याख्या को explain करने में failure रहा है। HULL की
theory तो gross और mechanistic होने के साथ-साथ
पूरी तरह Behaviouristic boundary के भीतर नहीं रह
सकी। मगर, जहाँ तक HEBB'S theory का प्रश्न है -
CHAPLIN and KRAWICK ने लिखा है: -

" HEBB'S

contribution restores Learning to its ancient
heritage in the Psychology of Perception."

3
afatimi